हुज्जतुल इस्लाम वलमुस्लिमीन मौलाना सै0 हसन नक़वी इज्तेहादी

आज दुनिया का हर इन्सान एका चाहता है और वही इन्सान ऊँचे ख़याल वाला समझा जाता है जिसकी कोशिशें और मेहनतें सिर्फ़ इस मक़सद से हों कि पूरी इन्सानियत एक ही राह पर चल पड़े, हक़ीक़त में दुनिया में जिस तरह इन्सान कई सूरतों और हैसियतों के नहीं इसी तरह अलग–अलग ख़याल वाले भी नहीं। हर इन्सान अपनी ज़िन्दगी के हर अहम वाक़िए को, हर नए राज़ को अपनी ज़िन्दगी का आख़री वाक़िआ और सरमाया समझता है लेकिन अस्ल में वह उसकी ज़िन्दगी के किसी और वाक़िए की पहली कड़ी होता है। इन्सान अपनी ज़िन्दगी के किसी अनजाने मगर होने वाले वाक़िए के लिए बहुत से क़ानून बनाता है लेकिन कोई ऐसी छुपी ताक़त जिसको वह उस वक़्त समझ भी नहीं सकता, उसके बनाए क़ानूनों को इस तरह फैला देती है जिस तरह किसी ने बहुत ही एहतियात से एक तरीक़े में बहुत से मोतियों को पिरो दिया हो और ज़माने के हादसों ने उन्हें बिखेर दिया हो, लेकिन इसके बाद भी बहुत से इन्सान ऐसे हैं जो नहीं समझते और उस छुपी ताक़त से पूरी तरह मुक़ाबला करते रहते हैं लेकिन हर बार हार का मुँह देखना पड़ता है क्योंकि उस वक़्त से और इन्सान की ताक़त से कोई मुक़ाबला ही नहीं हो सकता। सारे इन्सानों के ज़हन अलग–अलग नहीं हर शख़्स अपनी ज़हनी कोशिशों और मेहनतों का नतीजा खुद हासिल करना चाहता है लेकिन ऐसे इन्सान को अक्सर हार का मुँह देखना पड़ता है। यह ज़रूर है कि एक इन्सान की दिमाग़ी ताक़तें, ज़हनी क़ूव्वतें और फ़िक्र के फैलाव अगर काम करने लगें तो फिर मैं तो यह कहता हूँ कि वह दुनिया की सारी अच्छाईयों का आईना बन जायेगा इस तरह कि अख़लाक़ और मुहब्बत की ख़ूबसूरती उसमें नज़र आयेगी। ईमान और वफ़ादारी झलकती नज़र आयेगी, ईसार और बराबरी की तस्वीर नज़र आयेंगी। सब्र व मज़बूती क़दम चूमेंगे, क़दमों के ठहराव और ख़ुशी व मसर्रत साया देगी मगर हक़ीक़त तो यह है कि ऐसे इन्सान की कामियाबी तक़रीबन नामुमकिन सी नज़र आती है अक्सर यह देखा गया है कि इन्सानी दिमाग़ किसी ख़ास मक़सद के लिए नामालूम किन–किन तरीक़ों से कैसी–कैसी एहतियात करते हुए कुछ चीज़ें तैयार करता है और नतीजे का इन्तिज़ार करता रहता है लेकिन कोई दूसरा शख़्स उन तरीक़ों से ही कोई दूसरा नतीजा निकलना चाहता है इस तरह इन दोनों में टकराव पैदा हो जाता है तो कभी तो दोनों कामियाब हो जाते हैं और कभी एक कामियाब होता है लेकिन अगर इन्सान का दिमाग़ इस बात पर ग़ौर करता कि अगर इतनी बड़ी दो ताक़तें एक होकर किसी नतीजे तक जाना चाहेंगी तो दोनों के तरीक़े रास्ता दिखाने वाले बन कर मन्ज़िले मक़सूद तक पहुँचा देंगे। यह इन्सान की ना समझी और पस्त ख़यालो है कि वह ख़ुद ही अपनी मेहनतों का फल हासिल करना चाहता है। इस हाल में कि उसको यह तजुर्बा भी हासिल हो चुका है कि इस तरह मक़सद भी हासिल नहीं होता, मगर फिर भी वह अपने अक्खड़पन से ज़िद

पर अड़ा रहता है हक़ीक़त में बिना एक दूसरे का हाथ बटाये दुनिया की ज़िन्दगी नहीं गुज़ारी जा सकती। इन्सान के ज़हन में लाखों ख़याल आते हैं वह किसको इख़्तियार करे और किसको छोड़े? हक़ीक़त में इत्तेहाद के बिना दुनियावी ज़िन्दगी गुज़ारना नामुमकिन है एक अकेला इन्सान सिर्फ़ अपनी ही ज़रूरतों को पूरा नहीं कर सकता। एक इन्सान अपने लिए खेती भी करे, कपड़े का भी इन्तिज़ाम करे, यह नामुमकिन है बल्कि दुनिया की ज़िन्दगी यूँ ही सुधर सकती है कि कोई हमारे लिए ख़ाने का इन्तिज़ाम करे और हम किसी के लिए कपड़ों का इन्तिज़ाम करें, ताकि कारोबारी ज़िन्दगी संवर सके। कभी ऐसा होता है कि इन्सान एक काम को अपने फ़ायदे का समझ कर करता है लेकिन उसमें नुक़सान होता है इसलिए ज़रूरत पड़ी कि कोई इससे बड़ी ताक़त हो जो उससे इस तरह जुड़ी हो कि उसकी कमी पूरी हो जाए ताकि दुनिया में छुटकारा हो सके। यह बात बिल्कुल साफ है कि एक ताक़त के बजाए दो ताक़तें ज़्यादा काम आने वाली होती हैं, तो अगर दो से ज़्यादा ताक़तें मिल जायें तो वह उससे ज़्यादा फ़ायदे वाली होंगी, लेकिन अगर दुनिया की सारी ताक़तें एक होकर काम करें तो यक़ीनन वह कामयाब होंगी और इस जमाअत की हर फ़र्द के दिल में हमदर्दी का शौक़ होना चाहिए जो कि इन्सानियत का जौहर है यानी अपने फ़ायदे के साथ–साथ दूसरे के फ़ायदे का भी ख़याल भी सामने हो, तब तो यह जमाअत कामयाब हो सकती है वरना कामयाबी हरगिज़ नसीब न होगी, जैसे एक बहुत ही भारी पत्थर है जो कि हम से अकेले हरगिज़ नहीं उठ सकता, लेकिन अगर हम एक साथ मिल कर काम करें और कुछ लोगों को अपना साथी बनाएं तो वह पत्थर जिस मक़सद के लिए हम लोग उठा रहे हैं उठ जाएगा और इस तस्वीर में दूसरा पहलू भी साफ़ है वह यह कि अगर पत्थर उठाने वाले उन लोगों में एक की नियत हो कि पूरब की तरफ़ ले जायेगा और दूसरे का ख़याल हो कि पच्छिम की तरफ ले जाए तो यक़ीन मानिये कि वह पत्थर हरगिज़ हरकत न करेगा लेकिन अगर सबकी कोशिशें यह हों कि किसी एक ही तरफ ले जायेंगे तो वह आसानी से उठ जायगा बस यही हाल इस दुनिया की ज़िन्दगी का है अगर हम अकेले ज़िन्दगी गुज़ारना चाहें तो हरगिज़ नहीं गुज़रेगी। लेकिन अगर सब एक होकर एक साथ काम करें तो बेशक यह ज़िन्दगी देखने लायक़ होगी मालूम होता है कि एका एक ऐसी देखने लायक़ चीज़ है जिसकी तरफ हर दिल की कशिश होना चाहिए हम देखते हैं कि अलग–अलग पेड़ एक बाग़ नहीं कहे जाते, लेकिन अगर एक जगह पर हों जाएं तो इस क़ाबिल हो जाते हैं कि शौक़ीन लोगों की तफ़रीहगाह बनें। कई फूलों में यह ख़ूबी नहीं होती कि ख़ूबसूरत गले को ख़ूबसूरती बख़्शें लेकिन जिस वक़्त एक धागे में पिरोकर किसी हार की शक्ल में आ जाते हैं तो उस वक़्त इस क़ाबिल हो जाते हैं कि वह गले की ज़ीनत बख़्शें, बिखरे हुए मोती देखने लायक़ नहीं होते लेकिन अगर एक हो जाएं तो दुनिया की निगाहों में इतने महबूब हो जाते हैं कि गले का हार बन जाएं नर्म व नाज़ुक अलग–अलग डालियाँ और फूल इस क़ाबिल नहीं होते कि किसी के घर को ख़ूबसूरत बनाऐं लेकिन जिस वक़्त एक होकर गुलदस्ता बन जाते हैं तो ज़माने की ख़ूबसूरती बन जाते हैं। इन्सान के बदन के हिस्से अगर अलग हो जाएं तो सिर्फ मिट्टी के टुक्ड़े हैं सारी मख़लूक़ में सबसे नीच लेकिन अगर एक हो जाएं तो अशरफुल मख़लूक़ात कहने के क़ाबिल, तो अगर सारे इन्सान इत्तेहाद का जामा पहन लें तो फिर मेरी अक़्ल हैरान है कि उनकी क्या हालत होगी।